

# INHALTSÜBERSICHT

|  |     |
|--|-----|
| I. Teil: Aufstieg.....                   | 17  |
| 1. Ausgangslage.....                     | 17  |
| 1.1. Genese.....                         | 18  |
| 1.2. Krieg und Inflation.....            | 40  |
| 1.3. Satzung.....                        | 56  |
| 2. Umfeld.....                           | 67  |
| 2.1. Geld-und Kapitalmarkt.....          | 67  |
| 2.2. Banken.....                         | 85  |
| 2.3. Kommunen.....                       | 104 |
| 3. Expansion.....                        | 123 |
| 3.1. Geschäfte und Risiken.....          | 124 |
| 3.2. Interessen und Einflußnahmen.....   | 161 |
| 3.3. Kontrollen und Täuschungen.....     | 231 |
| <br>                                     |     |
| H. Teil: Fall.....                       | 263 |
| 1. Umfeld.....                           | 263 |
| 1.1. Banken.....                         | 264 |
| 1.2. Geld- und Kapitalmarkt.....         | 289 |
| 1.3. Kommunen.....                       | 303 |
| 2. Kontraktion.....                      | 317 |
| 2.1. Sturz.....                          | 317 |
| 2.2. Stützung.....                       | 351 |
| 2.3. Liquidation.....                    | 384 |
| 2.4. Rekonstruktion.....                 | 411 |
| 3. Anmerkungen.....                      | 453 |
| 3.1. Diskussionen und Personen.....      | 453 |
| 3.2. Singularitäten und Paritäten.....   | 480 |
| 3.3. Konsequenzen und Gegenwärtiges..... | 503 |

# INHALTSVERZEICHNIS

|  |     |
|--|-----|
| Vorwort.....   | 5   |
| Inhaltsübersicht.....  | 7   |
| Inhaltsverzeichnis.....                                      | 8   |
| <br>   |     |
| Einleitung.....  | 12  |
| <br>   |     |
| I. Teil: Aufstieg.....                                       | 17  |
| <br>   |     |
| 1. Ausgangslage.....   | 17  |
| 1.1. Genese.....   | 18  |
| Die Gründung der Rheinischen Provinzial-Hülfskasse 1854..... | 22  |
| Die Umgestaltung zur Landesbank 1888.....                    | 29  |
| Zur Geschäftspolitik vor 1914.....                           | 35  |
| 1.2. Krieg und Inflation.....                                | 40  |
| Lohes Spezialbankenkonzept.....                              | 44  |
| Lohes Proklamation.....                                      | 47  |
| Der Weg in die Expansion?.....                               | 48  |
| Der Weg aus der Kontrolle?.....                              | 52  |
| 1.3. Satzung.....  | 56  |
| Organe.....  | 58  |
| Geschäfte.....   | 62  |
| <br>   |     |
| 2. Umfeld.....   | 67  |
| 2.1. Geld-und Kapitalmarkt.....                              | 67  |
| Reinhold-Anleihen.....                                       | 72  |
| Auslandsanleihen.....  | 78  |
| 2.2. Banken.....   | 85  |
| Kongruenzen.....   | 89  |
| Konkurrenzen.....  | 93  |
| 2.3. Kommunen.....   | 104 |
| Entschuldung.....  | 108 |
| Verschuldung.....  | 114 |
| <br>   |     |
| 3. Expansion.....  | 123 |
| 3.1. Geschäfte und Risiken.....                              | 124 |
| Liquidität.....  | 130 |
| Rentabilität.....  | 132 |

|   |     |
|---|-----|
| Preiskampf.....                               | 136 |
| (Nicht-) Konsolidierung.....                  | 140 |
| Kontingentierung.....                         | 143 |
| Kontinuität.....                              | 148 |
| Initiativen.....                              | 154 |
| 3.2. Interessen und Einflußnahmen.....        | 161 |
| Das Innenministerium.....                     | 164 |
| Der Oberpräsident.....                        | 170 |
| Die Reichsbank.....                           | 173 |
| ... und Auslandsanleihen.....                 | 175 |
| ... und Inlandsanleihen.....                  | 179 |
| Die Kommunen.....                             | 184 |
| Der Provinziallandtag.....                    | 189 |
| Der Provinzialausschuß.....                   | 191 |
| Der Verwaltungsrat.....                       | 193 |
| ... und Berufungen.....                       | 201 |
| Die Gemeindeschulden.....                     | 205 |
| Einschub: Die Mitteldeutsche Landesbank.....  | 213 |
| Der Deutsche Sparkassen- und Giroverband..... | 217 |
| Die private Bankenwelt.....                   | 222 |
| Louis Hagen.....                              | 227 |
| 3.3. Kontrollen und Täuschungen.....          | 231 |
| „Machtergreifung“.....                        | 232 |
| Steuerung.....                                | 236 |
| Kommissionen.....                             | 238 |
| Beschönigungen.....                           | 241 |
| Fälschungen.....                              | 244 |
| Revisionen.....                               | 249 |
| Nochmals: Louis Hagen.....                    | 252 |
| Erstmals: Simon Alfred Abramowitz.....        | 257 |
| II. Teil: Fall.....                           | 263 |
| 1. Umfeld.....                                | 263 |
| 1.1. Banken.....                              | 264 |
| Krisenausbruch.....                           | 264 |
| Krisenmanagement.....                         | 270 |
| ... und Sparkassen.....                       | 276 |
| Krisenfolgen.....                             | 283 |
| 1.2. Geld- und Kapitalmarkt.....              | 289 |
| Abgetrennte Auslandsmärkte.....               | 290 |
| Deroutierte Inlandsmärkte.....                | 294 |

|   |     |
|---|-----|
| Wiederbelebte Inlandsmärkte.....                                | 297 |
| 1.3. Kommunen.....  | 303 |
| Krisenausbruch.....   | 304 |
| Krisenverschärfung.....   | 308 |
| Krisenbereinigung.....  | 311 |
| 2. Kontraktion.....   | 317 |
| 2.1. Sturz.....   | 317 |
| 12. Juni: Das Innenministerium greift ein.....                  | 320 |
| Halbjahresultimo: Die ersten 15 Millionen der Reichsbank.....   | 323 |
| 4. Juli: Die Reichsregierung schaltet sich ein.....             | 329 |
| 7. Juli: Weitere 10 Millionen der Reichsbank?.....              | 333 |
| 13. Juli: Die Darmstädter und Nationalbank bricht zusammen..... | 335 |
| 21. Juli: Eine Girozentrale wird installiert.....               | 340 |
| 23. Juli: Ein Ausschuß wird installiert.....                    | 342 |
| 28. Juli: Die Landesbank meldet Konkurs an?.....                | 347 |
| 2.2. Stützung.....  | 351 |
| 5. August: Der Stützungsbeschluß.....                           | 352 |
| 17. August: Der Vergleich.....                                  | 355 |
| 20. August: Der Sanierungsplan.....                             | 357 |
| Die 75 Millionen von Reichs- und Akzeptbank.....                | 358 |
| Die 9 Millionen der rheinischen Steuerzahler.....               | 366 |
| Die 42,5 Millionen der Kommunen.....                            | 375 |
| 2.3. Liquidation.....   | 384 |
| Ein Brief der Reichsbank.....                                   | 385 |
| Eine Konferenz im Innenministerium.....                         | 386 |
| Plan 1: Weltziens Sanierungs-„Skizze“.....                      | 389 |
| Plan 2: Scheches/Nettelrods Aktienbank-Konzept.....             | 390 |
| Chefbesprechung im Kanzleramt: Liquidation?.....                | 392 |
| Besprechung im Innenministerium: Rekonstruktion?.....           | 394 |
| Plan 3: Abramowitz' Liquidations-Plan.....                      | 397 |
| Besprechungen im Innenministerium: Liquidation!.....            | 398 |
| Die Bankengläubiger.....  | 402 |
| Der Provinzialverband.....                                      | 407 |
| 2.4. Rekonstruktion.....  | 411 |
| Die Gemeinden.....  | 411 |
| Die Umschuldung.....  | 416 |
| Die Sparkassen.....   | 419 |
| Der Gewährträger.....   | 422 |
| Die inländischen Banken.....                                    | 424 |
| Die ausländischen Banken.....                                   | 425 |
| Ein Brief der Landesbank.....                                   | 430 |

|   |     |
|---|-----|
| Die Diskussionen um eine Gemeinschaftsbank..... | 432 |
| Die Schatzanweisungen.....                      | 437 |
| Die Zinszuschüsse.....                          | 439 |
| Der Liquiditätskredit.....                      | 440 |
| Die Umgründung.....                             | 441 |
| Der Fortgang.....                               | 446 |
| <br>  |     |
| 3. Anmerkungen.....                             | 453 |
| 3.1. Diskussionen und Personen.....             | 453 |
| Auf provinzieller Ebene.....                    | 454 |
| ... die Regierungsparteien.....                 | 455 |
| ... die extremistischen Parteien.....           | 462 |
| Auf staatlicher Ebene.....                      | 464 |
| Auf Reichsebene.....                            | 466 |
| Die Bankenverbände.....                         | 468 |
| Die Bankleiter.....                             | 470 |
| Einschub: Die Mitteldeutsche Landesbank.....    | 478 |
| 3.2. Singularitäten und Paritäten.....          | 480 |
| Dimensionen.....                                | 483 |
| Wirkungen.....                                  | 485 |
| Kosten.....                                     | 488 |
| Hilfen.....                                     | 490 |
| Motive.....                                     | 498 |
| 3.3. Konsequenzen und Gegenwärtiges.....        | 503 |
| Satzungspolitik.....                            | 504 |
| Bankpolitik.....                                | 507 |
| Gemeinschaftsbank-Politik.....                  | 510 |
| Ausblick.....                                   | 514 |
| <br>  |     |
| Schluss.....                                    | 522 |
| <br>  |     |
| Epilog.....                                     | 527 |
| <br>  |     |
| Anhang.....                                     | 528 |
| Abkürzungsverzeichnis.....                      | 591 |
| Quellen- und Literaturverzeichnis.....          | 599 |
| Darstellungsverzeichnis.....                    | 625 |
| Tabellenverzeichnis.....                        | 628 |
| Anlagenverzeichnis.....                         | 630 |